तृतीय अध्याय :-

धर्मवीर भारती के उपन्यासों में संवाद एवं भाषाशैली।

तृतीय अध्याय : "धर्मवीर भारती" के उपन्यासो में संवाद एवं भाषाशैली ।

3:1 उपन्यास में संवाद का महत्व –

उपन्यास में संवाद को कथोपकथन या वार्तालाप भी कहते है । उपन्यास के प्रमुख तत्वों में संवाद या कथोपकथन का महत्व अनन्य साधारण है । "संवाद" को उपन्यास का "प्राण" भी कहा जाता है । कथोपकथन के द्वारा ही पात्रों में सजीवता आती है । इस तत्व के द्वारा हम उसके पात्रों से विशेष परिचित होते और दृश्यकाव्य की सजीवता और वास्तविकता का बहुत कुछ अनुभव करते है । कथोपकथन का मुल उपयोग पात्रों के मनोवेग उसकी प्रवृत्तियाँ, उनकी ईच्छा, अभिलाषा तथा रागद्वेष का पात्रों की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्त होता है । याने की पात्रों के अन्तर्वृत्तीयों का प्रकाशन भी कथोपकथन के द्वारा होता है ।

लेखक अपने विचारों और भावों को उपन्यास के पात्रोंद्वारा ही वाणी देता है । लेखक अपने कृति में कथोपकथन के द्वारा सरसता, नाटकीयता के साथ–साथ स्पष्टता एवं स्वाभाविकता की भी वृध्दि करता है । कथानक को गति देना, वातावरण की सृष्टि करना, पात्रों के चरित्र का उद्‌घाटन करना आदि कार्य वार्तालाप द्वारा कराये जाते है । कथोपकथन या संवाद पात्रानुकूल, छोटे, व्यंग्यपुर्ण तथा अर्थ पुर्ण होना सफल उपन्यासकार का लक्षण है संवाद में अनावश्यक दुरुहता या रहस्यवाद होने से कथानक विकास में रुकावट आती है । संवाद विश्रृंखलित नही होने चाहिए । वे हमेशा पात्रों के अनुरुपही होने चाहिए । जिसप्रकार नगर के सुशिक्षित आदमी के संवाद और देहात के अशिक्षित आदमी के संवादों में भिन्नता आती है । याने की पात्रों के सामाजिक स्तर, शिक्षा संस्कृति, प्रकृति एवं संस्कार का सर्वोत्तम परिचायक कथोपकथन ही है । कथोपकथन के द्वारा पात्रों की विचारधारा का परिचय होता है । कलाकार का जीवन दर्शन भी बोधगम्य बन जाता है । जो उपन्यासकार स्वकीय विचारों की अभिव्यक्ति के लिए ही उपन्यास लिखते है । वे मुख्य पात्रों में से किसी एक के रुप में उपस्थित हो जाते है और कथोपकथन के द्वारा अपनेमत की प्रतिष्ठा करते हुए दृष्टिगत होते है । उपन्यास का सर्वोत्तम स्वरुप वही माना जाता है, जिसमें पाठक को यह न प्रतीत हो कि कोईउसे कथा कह रहा है । इसके बारे में प्रेमचंदजी कहते है– "उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलमसे जितना कम लिखा जाए उतनाही अच्छा है ।"[1]

3:2 संवाद के गुण –

संवाद की सफलता के लिए उसमें निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है ।

3:2:1 उपयुक्तता –

यह संवाद का महत्वपूर्ण गुण है । उपयुक्त कथोपकथन विशेष स्थलपर चमत्कार की सृष्टि करते है । तो अनुपयुक्त कथोपकथन उपन्यास में रुकावट या दोष उत्पन्न करते है । कथोपकथन हमेशा उपन्यास की घटना या वातावरण के अनुरुप होना जरुरी है ।

3:2:2 अनुकूलता

इस गुण का सम्बन्ध घटना औचित्य से होता है । कथोपकथन पात्रों के स्वभाव के अनुकूल होना नितांत जरुरी है । कथोपकथन प्रतिकूल होगा तो वह चरित्र विकास में बाधा उत्पन्न करता है । कथोपकथन को पात्रों के सामाजिक, बौध्दिक और सांस्कृतिक स्तर के अनुकूल कार्य करना पडता है ।

3:2:3 स्वाभाविकता –

कथोपकथन का प्रवेश उपन्यास में स्वाभाविक रुप से होना चाहीए । पाठक को ऐसा प्रतीत न हो कि यह कथोपकथन बलपुर्वक या अस्वाभाविक रुप से उपन्यास में समाविष्ट किया गया है ।

3:2:4 सम्बध्दता

उपन्यास कार उपन्यास में कथोपकथन के माध्यम से पाठकों को जो बात कहता या कहना चाहता है । उसका सम्बन्ध कथानक या पात्रों से होना चाहिए ।

3:2:5 संक्षिप्तता –

उपन्यासमें संक्षिप्त कथन आवश्यक होता है । उपन्यास में संक्षिप्त कथोपकथन ही प्रभावात्मकता में वृध्दि पैदा करते है । संवादो का विस्तृत रुप

अस्वाभाविक तथा नैराश्यपूर्ण लगता है । उपन्यास में संक्षिप्त कथोपकथन ही पाठकों को सहज आत्मसात होते है । जिससे उपन्यास पढ़ने में रुची पैदा होती है ।

3:2:6 उद्देश्यपूर्णता

उपन्यास में उद्देश्यपूर्ण संवाद ही उसकी सफलता में सहयोग देते है । उद्देश्य रहित संवाद फिके एवं अनावश्यक लगते है । संवाद का उद्देश्य भविष्य में होनेवाली सुख:द, दु:खद घटना का पूर्व संकेत होता है ।

3:2:7 भावात्मकता

इस गुण के कारण कथोपकथान में सरसता, प्रभावात्मकता आती है । कथोपकथन का प्रयोग पात्रों के भाव के अनुकूल होना चाहिए ।

3:2:8 मनोवैज्ञानिकता

आधुनिक उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता का समावेश हो रहा है । आज उपन्यासकार अपने पात्रों के चरित्रपर सूक्ष्मता से अध्ययन कर रहे है । इस गुण के कारण कथोपकथन में कलात्मकता आती है ।

3:3 कथोपकथन के कार्य

संवाद उपन्यास में अनेक कार्य करता है । वह कथा–विस्तार के साथ पात्रों की व्याख्या करता है । उपन्यासकार अपने उत्कृष्ठ संवाद के द्वारा व्यक्ति समाज की विभिन्न समस्याओंसे परिचित करता है । कथोपकथन के निम्नलीखित कार्य होते है ।

3:3:1 कथावस्तु का विस्तार

कथोपकथन का प्रमुख हेतु कथावस्तुका विस्तार करना है । उपन्यासकार अपने उपन्यासोमें कथा विस्तार करने के लिए संवादो का प्रयोग करता है । यह कथोपकथन संभाषण के रुप में कथानक को गति देते है । उपन्यास में वर्णित

घटनाओं या दृश्यो में सजीवता निर्माण करके उसके संगठन से कथानक का विस्तार होता है ।

3:3:2 पात्रों की व्याख्या करना

पात्रों का चरित्र, उनके –हदय के भाव, परस्पर बातचीत में ही प्रकट होते है । संवादके माध्यमसे उपन्यासकार पाठकोंको अपने पात्रों के विषय या अन्दर्द्वन्द संबधी जटिलताओंका बोध करता है । कथोपकथन के द्वारा पात्रों का चरित्र–चित्रण प्रत्यक्ष और परोक्षरुप में होता है । उनका चरित्र–चित्रण करके उनकी व्याख्या करता है ।

3:3:3 समस्याओं का उद्‌घाटन करना

कथोपकथन केवल कथावस्तु का विस्तार या पात्रों की व्याख्या ही नहीं करता बल्कि उसके साथ पाठकों को समाज की समस्याओं से परिचित करता है । प्रस्तुत समस्याएँ व्यक्ति, समाज, धर्म या देश की हो सकती है। समस्याओं का उद्‌घाटन करनेवाले संवाद बडा रुप याने संभाषण बन जाते है ।

3:3:4 जीवन के सौन्दर्य को प्रकट करना

उपन्यासकार अपने उपन्यास में कथोपकथन के माध्यमसे जीवन के सौन्दर्य के साथ सृष्टि के सौन्दर्य का वर्णन करता है । अपने कौशल्य कला से जीवन की सुन्दरता तथा आदर्शता का चित्रण– कथोपकथन से करता है ।

3:4 "धर्मवीर भारती" के उपन्यासों में संवाद

भारतीजीने अपने "गुनाहों का देवता" और "सुरज का सातवाँ घोडा" उपन्यासो में प्रमुख पुरुष पात्र के द्वारा कथानक को प्रस्तुत किया है । दोनों ही उपन्यासों के संवाद चन्दर और माणिक का चरित्र विकास करते है । लेखक ने उपन्यासों के सभी तत्वों ध्यान में रखकर पात्रों के आपसी वार्तालाप द्वारा दोनों कृतियों का निर्माण किया है । इन्ही तत्वों में से कथोपकथन के छोटे–बडे संवादो के माध्यम से उपन्यासों का विकास किया है । उनके संवादो में सभी गुणों का समावेश दिखायी देता है । अतः दोनों ही उपन्यासों के संवाद "प्रेम" की सही व्याख्या करने में सफल बन जाते हैं ।

भारतीजी के दोनों ही उपन्यासों के संवाद कथावस्तु के विकास में सफल हुए है । उपन्यासों के पात्रों के वार्तालाप द्वारा लेखकने कथानक आगे बढाया है । कथानक के कारण वर्णित घटनाओं या दृश्यों में सजीवता आ गयी है । गुनाहों का देवता में डॉ.शुक्ला और बुआ का संवाद ।

"हाँ, येतो ठीक है ।" डॉ.शुक्ला बोले – "मै खुद सुधा का ब्याह अब टालना नही चाहता । बी.ए. तक की शिक्षा काफी है वरना फिर हमारी जाति में तो लडके नही मिलते । लेकिन ये जो लडका तुम बता रही हो तो घरवाले कुछ एतराज तो नहीं करेंगे । और फिर, लडका तो हमें अच्छा लगा लेकिन घरवाले पत्ता नही कैसे हों ?

"अरे तो घरवालन से का करै का है तो को । लडका तो अलग है, अपने आप पढ रहा है और लडकी अलग रहिए, न सास का डर न ननंद की धौंस । हम पत्री मगवाये देइतही, मिल वाय लेव ।"[2]

प्रस्तुत संवाद ने कथानक के विकास को गति देने का कार्य किया है । उपन्यासकार कथानक में कहीं भी व्यवधान या मन्दता नहीं आने देता है । प्रत्येक मोडपर कथानक में नई गति और वक्रता आती है । दूसरा उदाहरण देखिए :

कैलाश और चन्दर का संवाद

"मुझे जरा रीवाँ तक बहुत जरुरी काम से जाना है, वहाँ कुछ लोगोंसे मिलना है, कल दोपहर तक मैं चला आऊँगा ।"

"इसके मतलब मेरे पास नहीं रहोगे एक दिन भी ।"

"नहीं, इन्हे छोड जाऊँगा । लौटकर दिन–भर रहूँगा ।"

"इन्हें छोड जाओगे ? नहीं भाई, तुम जानते हो कि आजकल घर में कोई नही है ।" चन्दर ने कुछ घबराकर कहा ।

"तो क्या हुआ, तुम तो हो ।" कैलाश बोला और चन्दर के चेहरे की घबराहट देखकर हँसकर बोला – "अरे यार, तुम पर इतना अविश्वास नहीं है । अविश्वास करना होता तो ब्याह के पहले कर लेते ।"[3]

"सुरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास संवाद के माध्यम से विकसित हुआ है । इस उपन्यास के संवाद में अधिकतर नाटकीयता पायी जाती है । "गुनाहों का देवता" की अपेक्षा "सुरज का सातवाँ घोडा" में संवादो का अच्छा प्रयोग हुआ है । इसके संवाद कथानक विस्तार करनेमें सहायक है । यह संवाद कथावस्तु की उत्सुकता, शृंखलबध्दता को टुटने नही देते है ।

रामधन और जमुना का संवाद

"तो फिर क्या हो, रामधन ? तुम्ही कोयी जुगत बताओ ।"

"मालकीन, एक ही जुगत है ।

क्या ?

ताँगा रोज कम से कम बारह मिल चले । लेकिन मालिक कहीं जाते नहीं । अकेले मुझे ताँगा ले नहीं जाने देंगे । आप चले तो ठीक रहे ।"

"लेकिन हम बारह मिल कहाँ जायेंगे ? "क्यों नहीं सरकार । आप सुबह जरा जल्दी दो–ढाई बजे निकल चलें । गंगा पार पक्की सडक है, बारह मील घुमाकर ठीक टाईमपर हाजिर कर दिया करूँगा । तीन दिन की ही बात है ।[4]

प्रस्तुत कथन सरल, संक्षिप्त और प्रभावपूर्ण है । कथोपकथन पढने के लिए उपयुक्त है । कथोपकथन सजीव बन गया है । इसतरह के संवादो के कारण कथा में लय एवं गति उत्पन्न होती है । और कथा का प्रवाह जल्द से आगे जाने लगता है । ये कथोपकथन अपने इच्छीत फल प्राप्ति की ओर अग्रेसर होते रहते हैं ।

धर्मवीर भारती के उपन्यासों के संवाद कथानक के विकास के साथ पात्रों

के चरित्र चित्रण तथा पात्रों के अन्त मनोवृत्तियों को खोलने में सफल बन जाते है । पात्रों के वार्तालाप द्वारा ही पात्र एक दूसरों की पहचान करा देते है ।

गूनाहों का देवता में पम्मी और सुधा का संवाद

"क्या आप की तबीयत खराब है ।

नही तों ।

"आज आप बहुत पीली नजर आती है ।" पम्मी ने पूछा । "हाँ, कुछ मन नही लग रहा था तो मैं आप के पास चली आयी कि आपसे कुछ कविताएँ सुनूँ, अँग्रेजी की । दोपहर को मैने कविता पढने की कोशिश की तो तबीयत नही लगी और शाम को लगा कि अगर कविता नही सुनूँगी तो सिर फट जायेगा ।" सुधा बोली । "आप के मन में कुछ संघर्ष मालूम पडता है या शायद..एक बात पूछूँ आपसे ?"

"क्या पूछिएँ ?"

"आप बुरा तो नही मानेंगी ?"

"नही, बुरा क्यों मानुँगी ?"

"आप कपूर को प्यार तो नही करती ? उससे विवाह तो नहीं करना चाहती ?"

"छी: मिस पम्मी, आप कैसी बाते कर रही है । उसका मेरे जीवन में कोई ऐसा स्थान नही । छी:, आपकी बात सुनकर शरीर में काँटे उठ जाते है । मैं आरै चन्दर से विवाह करुँगी । इतनी घिनौनी बात तो मैनै कभी नही सुनी ।" माफ कीजिएगा, मैने यों ही पूछा था । क्या चन्दर किसी को प्यार करता है ?"

"नही, बिल्कुल नही । सुधा ने उतने ही विश्वास से कहा जितने विश्वास से अपने बार में कहाँ था ।"[5]

प्रस्तुत कथोपकथन से पात्रों के मन की छिपित इच्छाएँ प्रकट हुयी है । यह पम्मी और सुधा के बिच का नाटकीय वार्तालाप है । पम्मी सुधा और चन्दर के दिल की प्रेम भावना जानने के लिऐ उत्सुक है । तात्पर्य पम्मी चन्दर के प्रति आकृष्ट हुयी है ।

कथोपकथन पात्र की गतिविधियों पर पूर्ण नियंत्रण रखनेवाली परिस्थितियों को भी पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर देते है । "गुनाहों का देवता" के कथोपकथन पात्रों के अन्तर्गत के निगुढ रहस्य और विभिन्न कार्यो का परिचय करा देते है । इसप्रकार चारित्रिक विकास की दृष्टिसें "गुनाहों का देवता" के कथोपकथन सफल हुए हैं ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास के संवाद पात्रानुकूल और उनके मानसिक स्थिति के अनुकूल है । इसके संवाद चरित्र विश्लेषण में सहायक हुऐं है ।

जैसे – माणिक और लिली के बिच का संवाद

"कहिए जनाब ।" मानिक ने प्रवेश किया तो वह उठी और चुपचाप लाईट ऑन कर दी । माणिक मुल्लाने उसकी खिन्न मन:स्थिति, उसका अश्रूसिक्त मौन देखा तो रुक गये और गम्भीर होकर बोले, " क्या हुआ ? लिली । लिली ।"

"कुछ नहीं । लड़की ने हँसने का प्रयास करते हुए कहा, मगर आँखें डबडबा आयी और वह माणिक मुल्ला के पाँवों के पास बैठ गयी ।

माणिकने उसके बुन्दों में उलझी एक सुखी लटको सुलझाते हुए कहाँ, "तो नही बताओगी ?"

हम कभी छिपाते हैं, तुमसे कोई बात ?"

"नही, अब तक तो नहीं, छिपाई थी, आज से छिपाने लगी हो ।"

"नही, कोई बात नहीं । सच मानो ।" लडकीने जिसका नाम लिली था लिली नामसे पूकारी जाती थी, माणिक के कमीज़ के काँच के बटन खोलते और बन्द करते हुए कहा ।

"अच्छा मत बताओ । हम भी अब तुम्हें कुछ नही बतायेंगे ।" माणिक ने उठने का उपक्रम करते हुऐ कहा ।"[6]

उपर्युक्त कथोपकथन माणिक और लिली के बिच का प्रणय संवाद है ।

कथोपकथन के माध्यम से पात्रों के –हदय की बात ओठोंपर लाने में उपन्यासकार सफल हुए है । पात्रों के मनोभाव उपन्यास में सहज स्वाभाविक रुप सें आए है ।

भारती के दोनों ही उपन्यासें के संवाद पात्रों की व्याख्या करते है । उपन्यासों के संवाद पात्रों के स्वभाव, गुण का परिचय पाठकों को स्पष्ट बता देते है । संवाद पात्रों के अन्र्त द्वन्द्व को प्रस्तुत करते है । "गुनाहों का देवता" के संवाद आदर्श प्रेम युक्त पात्रों का निर्माण करते है, तो "सुरज का सातवाँ घोडा" के संवाद पात्रों के यथार्थ जीवन पर प्रकाश डालते है । अतः दोनों ही उपन्यासों के संवाद पात्रों का उचीत रुप देने में समर्थ है ।

भारती के उपन्यासों के संवाद विविध समस्याओंका चित्रण करते है । दोनों ही उपन्यास में "प्रेम समस्याँही प्रमुख है, लेकिन इनका स्वरुप अलग अलग है । यह समस्याएँ प्रस्तुत करते समय उपन्यास में संवाद बडा रुप धारण कर लेता है । निम्नलिखित कथोपकथन से चन्दर और सुधा की प्रेम समस्या दिखायी देती है

गुनाहों का देवता – चन्दर और सुधा का संवाद

"सुधा उठी और चाय ले आयी । चन्दर ने अपने हाथ से एक कप चाय बनायी और सुधा को पिलाकर उसी में पीने लगा । चाय पीते–पिते सुधा बोली– "चन्दर, तुम ब्याह मत करना ! तुम इसके लिए नहीं बने हो ।"

चन्दर सुधा को हँसाना चाहता था– "चल स्वार्थी कहीं की । क्यों न करुँ ब्याह ? जरुर करुँगा । और जनाब, दो–दो करुँगा ! अपने–आप तो कर लिया और मुझे उपदेश दे रही हैं ! "

सुधा हँस पड़ी । चन्दर ने कहा ।

बस ऐसे ही हँसती रहना हमेशा, हमारी याद करके और अगर रोयी तो समझ लो हम उसीतरह फिर अशान्त हो उठेंगे जैसे अभीतक थे ! ....'' "फिर प्याला सुधी के होंठो से लगाकर बोला– " अच्छा सुधी, कभी तुम सुनो कि मैं

उतना पवित्र नहीं रहा जितना कि हूँ तो तुम क्या करोगी ? कभी मेरा व्यक्तित्व अगर बिगड़ गया, तब क्या होगा ? "होगा क्या ? मै रोकनेवाली कोन होती हूँ ? मै खुद ही क्या रोक पायी अपने को । लेकिन चन्दर, तुम ऐसे ही रहना । तुम्हें मेरे प्राणों की सौगन्ध है, तुम अपने को बिगाड़ना मत ।"

चन्दर हँसा – "नही सुधा, तुम्हारा प्यार मेरी ताकत है । मैं कभी गीर नहीं सकता जब तक तुम मेरी आत्मा में गुँथी हुई हो ।"[7]

कथोपकथन प्रेम समस्या का चित्रण करने में सशक्त बन गया है ।

"सुरज का सातवाँ घोडा" में संवाद समस्याओं का उद्‌घाटन करते है । इस उपन्यास के संवाद निम्न मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं से पाठकों को परिचीत करते है । उपन्यास कथोप्कथन प्रेम समस्या, वैधव्य समस्या, जात–पात की समस्या, आर्थिक समस्याओं का चित्रण करते है । निम्नलिखीत संवाद जमुना के वैधव्य जीवन का वास्तव चित्रण करता है ।

"ज़मींदार बेचारे वृध्द हो चुके थे और उन्हें बहुत कष्ट था, वारिस भी हो चुका था अतः भगवान ने उन्हे अपने दरबार में बुला दिया । जमुना पति के बिछोह में धाड़ें मार–मारकर रोयी, चुड़ी–कंगन फोड़ डाले, खाना–पिना छोड़ दिया । अन्त में पड़ोसियोंने समझाया कि छोटे बच्चा है, उसका मुँह देखना चाहिए । जो होना था सो हो गया । पड़ोसियों के बहुत समझाने पर जमुनाने आँसु पोंछे । घर–बार संभाला । इतनी बड़ी कोठी थी, अकेले रहना एक विधवा महिला के लिए अनुचित था, अतः उसने रामधन को एक कोठरी दी और पवित्रता से जीवन व्यतीत करने लगी ।"[8]

प्रस्तुत कथोपकथन से जमुना के करुण वैधव्य जीवन का पत्ता चलता है । अतः समस्याओं को व्यक्त करनेवाले संवाद बडा रुप धारण करते है । जिससे पाठकों को आत्मसात करना कठीण हो जाता है ।

धर्मवीर भारती के उपन्यास के कथोपकथन से स्वाभाविकरुप से वातावरण की निर्मिती होती है । यह कथोपकथन कभी उत्साह का वातावरण तो कभी उदास मन:स्थिती का निर्माण करते है ।

"गुनाहों का देवता" – इसमें सुधा अस्पताल के कमरे में अंतीम साँसे गीन रही है । इस उदासी वातावरण का सुन्दर वर्णन लेखक ने किया है । उपन्यासकार के शब्दो में – "बड़ा भयानक दिन था । बहुत उँची छत का कमरा, दालानों में टाट के परदे पड़े थे और बाहर गरमी की भयानक लू–हू–हू करती हुई दानवों की तरह मुँह फाड़े दौड़ रही थी । डॉक्टरसाहब सिरहाने बैठे थे, पथरीली निगाहोंसे सुधा के पीले मृत प्राय चेहरे की ओर देखते हुए.... बिनती और चन्दर बिना कुछ खाये–पिये चुपचाप बैठे थे – रह–रहकर बिनती सिसक उठती थी; लेकिन चन्दर के मनपर पत्थर रख लिया था । वह एकटक एक ओर देख रहा था... कमरे में वातावरण शान्त था.... रह–रहकर बिनती की सिसकियाँ, पापा निश्वासें तथा घड़ी की निरन्तर टिक–टिक सुनाई पड़ रही थी ।"[9]

इस वर्णन में गरमी की भयानकता, शुक्ला का सुधा की ओर देखना, चन्दर बिनती का चुपचाप बैठना तथा घडी का टिक–टिक सुनाई देना आदि । यहाँ कथोपकथन उदासी वातावरण की निर्मिती करने में सफल बन गया है ।

"सुरज का सातवाँ घोडा" में कथोपकथन वातावरण निर्मिती करता है । लेखक के शब्दो में – "उसके बाद कमरे में भयानक दृश्य रहा । सत्ती काबू में ही न आती थी, पर जब चमन ठाकुर ने अपने एकही फौजी हाथ से पटरा उठाकर सत्ती को मारा तो वह बेहोश होकर गिर पड़ी । इसी आवस्था में सत्ती का चाकु वहीं छूट गया और उसके गहनों का बैग भी पत्ता नहीं कहा गया । माणिक का अनुमान था कि भाभीने उसे सुरक्षा के ख़याल से ले जाकर अपने सन्दुक में रख लिया था ।"[10]

उपन्यासकारने वातावरण निर्मिती के लिए कथोपकथन का यथासमय प्रयोग

करके उपन्यास में सजीवता निर्माण की है । कहीं कहीं पर उपन्यास के पात्रों के वार्तालाप में संघर्षमयता दिखायी देती है ।

कथोपकथन उपन्यास के पात्रों के अनुकूल बन पडे है । जैसे देहात के अनपढ, गँवार पात्रों के मुँह से निकली हुई भाषा और शहर के पढे-लिखे पात्रों के के मुँह से निकली हुयी भाषा में पर्याप्त अन्तर है । इसका दर्शन भारतीजी के कथोपकथन में मिलता है । जैसे-- "गुनाहों का देवता" में बुआ के संवाद में गँवारपन दिखायी देता है ।

अब बहुत जबान चलै लगी है । कौन है तोर जे के बलपर ई चमक दिखावत है । हम काट के धर देबै, तोके बताय देइत हई । मुँह झोंसी ! रेसीन होती तो काहे ई दिन देखै पड़त । उन्हें तो खाय गयी, हम हूँ का खाय लेव ।" अपना मुँह पीटकर बुआ बोलीं ।"[11]

"सुरज का सातवाँ घोडा" में शीक्षित युवक प्रकाश का संवाद देखिए -

"लेकिन इससे यह कहाँ साबित हुआ कि प्रेम-भावना की नींव आर्थिक सम्बन्धोंपर है और वर्ग-संघर्ष उसे प्रभावित करता है ।"[12]

उपन्यासकारने उपन्यास के कथोपकथन का प्रयोग पात्रों के बौध्दिक स्तर के अनुसार किया है । यहाँ कथोपकथन की भाषा, विचार चरित्रानुसार मिलते है ।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे "गुनाहों का देवता" के कथोपकथन सहायक बन पडे है । बर्टी की भावुकता एवं विक्षिप्त के अंकन के माध्यम से बर्टी का चरित्र उभरने लगता है । जैसे उसने कहा- "ये गुलाब सार्जेंट से ज्यादा प्यारे है, फिर इन्ही गुलाबों पर नाचती रही और सुबह होते ही, इन्ही फूलों में छीप गई । तुम्हें सुबह किसी फूल में मिली तो नहीं ।"

"उहुं, तुम्हे तो किसी फूल में नही मिली ।" बर्टीने बच्चों के-से भोले विश्वास के स्वरों मे कपूर से पुछा ।"[13]

इस कथोपकथन में मनोवैज्ञानिकता का दर्शन होता है । इस कथोपकथन में कुतूहलता और कलात्मकता पैदा हुयी है ।

"सुरज का सातवाँ घोडा" में मनोवैज्ञानिकता का अभाव है ।

भारतीजीके उपन्यासों में उद्देश्यपुर्ण संवाद दिखायी देते है । पात्रों के विभिन्न स्थितियों का चित्रण करने में संवाद सफल बन पाते है । कथोपकथन सरलतासे चरित्र का विकास करते है । इससमय संवाद स्वाभाविक रुप से आते है, तो कहीं जगहपर उनका रुप प्रभावपुर्ण संघर्षयुक्त बनता है । उपन्यास में कहीं छोटे तो कहीं बडे संवाद आते हैं । भारतीजी के संवाद चमत्कार की निर्मिती भी करते है । जिसको देखकर पाठक आश्चर्य चकित हो जाता है ।

अतः सहजता, उपयुक्तता, सरलता, संक्षिप्तता आदि नाटकीय कथोपकथन के अंग है । जिनका उपयोग भारतीजीके उपन्यासों मे मिलता है । इस समय उनकी भाषा पात्रानुकूल बनती है ।

3:4 कथोपकथन की सफलता

दोनों ही उपन्यास के कथोपकथन सफल बन गए है । इन उपन्यासोमें लेखक बहुत कुछ स्वयं न कहकर पात्रों के मुख से ही कहलाता है । पात्रों का यह वार्तालाप सोद्देश्य और सारगर्भित है । उपन्यासों के पात्र के मुख से निकला हुआ प्रत्येक शब्द उसके चरित्र एवं उसके मनोभावोंपर कुछ–न–कुछ प्रकाश डालता है । साथ ही वार्तालाप परिस्थितियों के अनूकूल, सरल, संक्षिप्त नाटकीय और सांकेतिक दिखायी देता है ।

"गुनाहों का देवता" में कथोपकथन के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व के साथ–साथ नाटकीयता का भी सृजन हुआ है । कथोपकथन में काव्यात्मकता है, जिसमें पाठक बह जाता है । साथ ही यह कथोपकथन मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे सहायक बन गये है । इसमें बर्ती की विक्षीप्त का समावेश होता है । "गुनाहों का देवता" के कथोपकथन में नाटकीयता, कुतूहलपुर्णता और कथानक का विकास करने की शक्ति है । अतः यह संवाद आपने आप में पूर्ण है ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" के संवाद यथार्थ को तिखा बनाने के लिए आए है । इसके संवाद छोटे–छोटे व्यंग्यपूर्ण ओर प्रभावशाली है । यह संवाद उपन्यासकारके उद्देश्य की सार्थकता में सहायक बन जाते है । कथोपकथन पात्रों के वास्तविक दर्शन करने में परीपूर्ण है । नाटकीयता इस उपन्यास के संवादों की प्रधान विशेषता है । इस दृष्टि से दूसरी दोपहर का अनाध्याय तो लेखक ने रंगमंचीय संकेतों के साथ प्रस्तुत किया है । यह उपन्यास कथोपकथन के माध्यमसे विकसित हुआ है । माणिक मुल्ला के कमरे पर जमे अड्डे के बिच घटित वार्तालाप–प्रश्न–उत्तर के सहारे कथानक को आगे बढाता है ।

धर्मवीर भारती के दोनो ही उपन्यासों के कथोपकथन सफल बनाने में सिध्द हस्त है । इन संवादो की रोचकता, सजीवता के कारण उपन्यास लोकप्रिय बन बैठे है ।

3:6:1 उपन्यास में भाषाशैली –

भाषा –

भाषा भावाभिव्यक्ति का महत्वपुर्ण साधन है । भाषा उपन्यासकार के विचारों की वाहक है, अतः भाषा में स्पष्टता और शक्ति का होना भी आवश्यक है । प्रवाहमयी भाषा उपनयास के आकर्षण को और अधिक बढा देती है और क्लिस्ट भाषा उपन्यास के प्रभाव को कम कर देती है । उपन्यास में भाषा का स्तर पात्रों के व्यक्तित्व तथा वर्म्य–विषय के अनुसार होना चाहिए भाषा पर लेखक का पूर्ण अधिकार हो तो ही कोई कृति लोक–प्रिय एवं सफल होती है । अतः जिस उपन्यास की भाषा कथ्य को प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित कर सकती है, वह कृति सार्थक होती है । जीवन सन्दर्भो के अनुसार भाषा भी यथार्थ होनी चाहिए । इसके बारे में डॉ.सुरेश सिन्हा कहते है– "विकलांग भाषा किसी उपन्यास के कथ्य को न तो सार्थक बना सकती है, न किसी संवेदनशीलता की प्रतिति ही दिला सकती है । वह मानवीय संदर्भो को कोई सार्थक संज्ञा भी नहीं दिला पाती । अपनी सुक्ष्मता, पैनेपन एवं काव्यात्मक व्यंजनाओ से ही उपन्यासों की भाषा आज अर्थवान हो सकती है ।"[14]

3:6:2 धर्मवीर भारती के उपन्यासो में भाषाशैली –

भाषा –

"गुनाहों का देवता" और "सूरज का सातवाँ घोडा" दोनों उपन्यासों की भाषा में अंतर पाया जाता है । गुनाहों का देवता की भाषा रोचक, रमणीय है इसकी भाषा में समहार शक्ति, ताल और लयबध्दता, कल्पना चातुर्य, भांवभगिता, सहजतासे झलकते है । इस में संस्कृत, फारसी, अग्रेजी, अरबी आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है । "सूरज का सातवाँ घोडा" बोलचाल की भाषा में लिखा हुआ एक अनोखा ढंग का उपन्यास है । इसकी भाषा में सरलता, स्पष्टता, सुक्ष्मता, यथार्थता, अलंकारीकता आदि गुणों का समावेश है । इसमें संस्कृत, फारसी, अग्रेजी, अरबी और ग्रामीण भाषा आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

धर्मवीर भारती के उपन्यासों में विभिन्न भाषा की शब्दावली पायी जाती है ।

देशी शब्द –

अ. तत्सम शब्द –

"गुनाहों को देवता" – पाप[75], ईश्वर[136], मन[138], देवता[208] आदि ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" – मन[57], दु:ख[68]

ब. तद्भव शब्द –

"गुनाहों का देवता" – संरक्षक[7], शिकारी[154], आँसु[96], पूजा–पाठ[25]आदि ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" – आँसू[69], भिखारी[93] आदि ।

क. अंग्रेजी शब्द –

"गुनाहों का देवता" में अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है । उदा. युनिवर्सिटी[2], पॉलिटिक्स[2], कॉन्फ्रेस[40], थीसिस[64], कमिश्नर[119], फॉरेस्ट[115] बाथरुम[235], एबार्शन[249], ऐम्बुलेन्स[254], प्रेग्नैसी[254] आदि ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" की भाषा बोलचाल के होने के कारण इसमें अंग्रेजी शब्दों का कम प्रयोग हुआ है ।

जैसे – बैंक[35], ओवरटाईम[35], टेम्परेचर[46], हेडक्वार्टर[54], ऑन[64] फ्लाय बेयर [75] आदि ।

ड. अरबी शब्द –

"गुनाहों का देवता" – नफरत[18], कागज[23], रिवाजों[38], फारिग[65], रपट[83] तुफान[113], जिन्दगी[116], बेशरम[121], एहसान[172], बाजार[173], शौहर[200], इनसान[212] आदि ।

"सूजर का सातवाँ घोडा" – जिन्दगी[43], जायदाद[53], नफरत[55], कागज[84] आदि ।

धर्मवीर भारती के दोनों ही उपन्यासों की भाषा पात्रानुकूल, विषयानुकूल, भावानुकूल है । भाषा पात्रानुकूल होने के कारण संवाद अत्यंत रोचक और स्वाभाविक हो उठे है । भारती की भाषा में प्रसंगानुकूलता का गुण पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है । प्रसंग चाहे प्रेम का हो, चाहे क्रोध का, चाहे

मृत्यु का सर्वत्र भाषा प्रसंग के अनुकूल स्वाभाविक तथा सजीव बन पडी है । जैसे – (सूरज का सातवाँ घोडा)

"आँख खुली तो टूण्डला के रेलवे अस्पताल में थे । दोनों पाँव नहीं थे । आसपास कोई नही था, बेहद दर्द था । खून इतना निकल चुका था कि आँख से कुछ ठीक दिखाई नहीं पडता था । सोचा, किसी को बुलावें तो मुँह से जमुना का नाम निकला, फिर अपने बच्चे का फिर बापू (महेसर) का और फिर चूप हो गये ।"[15]

भाषा को सँजाने--सँवार ने के लिए उपन्यासों में कहावते, लोकोक्तियों, सुक्तियों का प्रयोग हुआ है । सुक्तियों के कारण उपन्यासो में बोधगम्यता, चित्रात्मकता, प्रवाहमयता, तथा स्वाभाविकता के गुण पाये जाते है । उदाहरण के तौरपर "गुनाहों का देवता" की सुक्ति को देखा जा सकता है । "चाँद कितनी ही कोशिश क्यों न करे, वह रात को दिन नहीं बना सकता ।"[16]

दोनों ही उपन्यासों की भाषा कहीं-कहीं पर व्यंग्यात्मक बन गयी है । इनमें "सूरज का सातवाँ घोडा" का उदाहरण दृष्टव्य है । "तन्ना से विवाह की बात टूटने पर जमुना ने आँसु पोछे, फिर सिनेमा के नये गीत याद किए और इस तरह से होते-होते एक दिन 20 की उम्र को पार कर गई ।"[17]

इसप्रकार दोनोंही उपन्यासों की भाषा सफल एवं समृध्द है । भाषा के विषयानुकूल, प्रसंगानुकूल, भावानुकूल, चित्रात्मकता, प्रवाहमयता, स्वाभाविकता आदि गुण दिखायी देते है ।

3:6:2:2 शैली

रचनाकार अपनी भावाभिव्यक्ति को विशेष पध्दतिसे व्यक्त करने का प्रयास करता है, उसे शैली कहा जाता है । उपन्यास की शैली में स्पष्टता, प्रभात्मकता के साथ–साथ मधुरता और शक्ति का भी होना जरुरी है । उपन्यास मानव--जीवन के विविध रुपों का चित्रण करता है, अतः शैली विविध रुपों में व्यक्त होती है । उपन्यास के अवसर के अनुसार शैली में परिवर्तन आवश्यक है ।

आधुनिक युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी शैली है – "विधि शैली," जो प्राचिन वस्तु को नविन परिवेश में प्रस्तुत करती है । शैली उपन्यास के कथानक, चरित्र–चित्रण एवं भाषा आदि को एक ऐसे ढंग से प्रस्तुत करने का कार्य करती है, जिससे उपन्यास में नविनता एवं अभिनव प्रयोग उपस्थित हो सके । शैली का सम्बन्ध रचनाकार और उसकी रचना से होता है । अतः रचनाकार का परिवेश, अनुभव, शिक्षा, संस्कार, रुचि आदि का उस में विशेष महत्व होता है ।

हिन्दी साहित्य के प्रारंभिक उपन्यासों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया जाता था । परन्तु आज उपन्यास के क्षेत्र में अनेक शैलीयाँ अपनायी जाती है । जैसे– वर्णनात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, नाटकीय शैली, स्वप्न–शैली, व्यंगात्मक शैली, दृश्य शैली आदि ।

भारती के उपन्यासों में सभी शैलीयों का प्रयोग पाया जाता है । इन शैलीयों में वर्णनात्मक शैली, आत्म विश्लेषणात्मक शैली, दृश्य शैली, नाटकीय शैले, सांकेतिक शैली और लोक कथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है ।

"गुनाहों का देवता" में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग इलाहाबाद के सामाजिक भौगोलिक वातावरण के चित्रण में किया है । उपन्यास में नाटकीय शैली का प्रयोग सुधा और गेसू के कॉलेज जीवन की झाकियाँ स्पष्ट करने के लिए किया है ।

"सूरज का सातवाँ घोडज्ञ" में नाटकीय शैली की दृष्टि से दूसरी दोपहर का अनाध्याय लेखक ने रंगमंचीय संकेतो के साथ प्रस्तुत किया है । "गुनाहों का देवता" में पत्रात्मक शैली का सुन्दर प्रयोग हुआ है । इसमें चन्दर–सुधा, पम्मी–चन्दर के प्रेम पत्रों का समावेश है । परंतू "सूरज का सातवाँ घोडा" में "पत्रात्मक शैली" का अभाव है । भारती के दोनों ही उपन्यासों में स्वप्न–मनोविश्लेष्णात्मक और प्रतिकात्मक शैली का प्रयोग हुआ है । दोनों ही उपन्यासों में आए हुऐ स्वप्नों के इसके उत्तम उदाहरण है ।

दोनों ही उपन्यासों में "दृश्य शैली" का प्रयोग हुआ है । इस शैली के कारण उपन्यासों के दृश्यों में सजीवता आयी है । "गुनाहों को देवता" का उदाहरण देखीए– "मकान बहुत बडा था और पुराने अग्रेजों के ढंग पर सजा हुआ था । बाहर से जितना पुराना और गन्दा नजर आता था, अन्दर से उतना ही आलीशान और सुथरा ।" [18]

अतः दोनों ही उपन्यासों को अलोचकोने शिल्प प्रधान उपन्यासकी कोटी में स्वीकार किया है । भारतीजी के दोनों ही उपन्यासो में विविध शैलीयों का सफल प्रयोग हुआ है ।

3:5 नि ष्क र्ष

धर्मवीर भारती के दोनों उपन्यास कथोपकथन की दृष्टि से पुर्ण रुप से सफल है । गुनाहों का देवता में कथोपकथन के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व के साथ नाटकीयता प्रदर्शित हुयी है । इस के कथोपकथन में संक्षिप्तता, कुतूहलता और मनो–वैज्ञानिकता आयी है । "सूरज का सातवाँ घोड़ा" उपन्यास कथोपकथन के माध्यम से कथानक के साथ पात्रों के चरित्र का विकास करता है । इस उपन्यास के कथोपकथन में अधिकतर स्वाभाविकता, नाटकीयता और संक्षिप्तता आयी है । इसके कथोपकथन में मनो–वैज्ञानिकता का अभाव है । "गुनाहों का देवता" की अपेक्षा "सूरज का सातवाँ घोडा" में कथोपकथन का स्थान महव्तपूर्ण है ।

दोनों ही उपन्यासों के संवादो में कहीं भी स्थीरता नही है । ये कथोपकथन पात्रों की व्याख्या करते है । वे देशकाल और वातावरण के निर्माण में सहाय्यक बन गये है । उपन्यासकार दोनों ही कृतियों में संवाद के द्वारा समाज की समस्याओं का चित्रण करते है । इन समस्याओं में ज्यादातर प्रेम समस्याओं का चित्रण प्रभावशाली बन गया है कथोपकथन समस्याओं का चित्रण करते वक्त बहुत लम्बे भाषण का रुप धारण करते है, परंतु न इनसे उपन्यास–कला की हानि हुई है और न कथानक में व्यवधान ही पड़ा है । ऐसे कथोपकथनों में भी वेग बना है ।

अतः दोनों ही उपन्यासों के संवाद सशक्त एवं सजीव बन गये है । इन में संवादो के सभी गुण अन्तर्निहित है ।

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते है कि– भारतीजी का भाषा पर अधिकार है । उनकी सरस भाषाशैली के योगदान से उपन्यासों में रोचकता, प्रवाह मयता, स्वाभाविकता में कलात्मक वृध्दि हुई है । "गुनाहों का देवता" की भाषा रुमानी, चित्रात्मक, इन्द्रधनुष और फूलों से सजी हुई है । तो "सूरज का सातवाँ घोडज्ञ" बोलचाल की भाषा की प्रधानता है । माणिक उपन्यास की कथाएँ लोक कथात्मक शैली में प्रस्तुत करता है ।

दोनों ही उपन्यासों की भाषा में विभिन्न भाषाओं के शब्द देखने को मिलते है । इसमें अंग्रेजी, फारसी, अरबी, संस्कृत शब्दों का समावेश है । "सूरज का सातवाँ घोडा" में ग्रामिण भाषा के शब्द अधिक मात्रा में पाये जाते है । उपन्यासों में प्रसंगानुकूल

मुहावरे, लोकोक्तियों, सुक्तियों और समानार्थी आदि के सहज स्वाभाविक प्रयोग दिखायी देते है । भारतीजी को इसमें सफलता मिली है ।

भारतीजी ने दोनों ही कृतियों में विविध शैलीयों का सफल प्रयोग किया है । वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक, नाटकीय, संवाद, सांकेतिक, स्वप्न--मनों विश्लेष्णात्मक आदि शैलीयों ने इसके शिल्प सौन्दर्य को और अधिक आकर्षक बनाया है । "गुनाहों का देवता" में पत्रात्मक शैली के कई उदाहरण मिलते है, लेकिन "सूरज का सातवाँ घोडा" में पत्रात्मक शैली का अभाव है । इसका कारण है कि, यह उपन्यास लोक कथात्मक शैली का प्रयोग किया है ।

भारतीजी की भाषाशैली में विविधता पायी जाती है । भाषाशैली की दृष्टि से दोनों उपन्यास समृद्ध और सफल है ।

स न्द र्भ

1.	"हंस" मासिक	अप्रैल, 1982	पृ. 40 ।
2.	डॉ. धर्मवीर भारती	गुनाहों का देवता	पृ. 64 ।
3.	वही	वही	पृ. 221–222 ।
4.	डॉ. धर्मवीर भारती	"सूरज का सातवाँ घोडा"	पृ. 39 ।
5.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 109 ।
6.	डॉ. धर्मवीर भारती	"सूरज का सातवाँ घोडा"	पृ. 64 ।
7.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहें का देवता"	पृ. 165 ।
8.	डॉ. धर्मवीर भारती	"सूरज का सातवाँ घोडा"	पृ. 39–40 ।
9.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 254 ।
10.	डॉ. धर्मवीर भारती	सुरज का सातवाँ घोडा"	पृ. 87 ।
11.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 183 ।
12.	डॉ. धर्मवीर भारती	"सूरज का सातवाँ घोडा"	पृ. 29 ।
13.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 22 ।
14.	डॉ. सुरेश सिन्हा	"हिन्दी उपन्यास"	पृ. 385 ।
15.	डॉ. धर्मवीर भारती	"सूजर का सातवाँ घोंडा"	पृ. 56 ।
16.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 123।
17.	डॉ. धर्मवीर भारती	"सूरज का सातवाँ घोडा"	पृ. 24।
18.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 19 ।